

प्रपञ्चसारतन्त्रे
शंकराचार्य : तान्त्रिकसाधना

(प्रथम खण्ड)

डॉ० रामचन्द्र पुरी



चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान
दिल्ली

अनुक्रमणिका

१. अक्षरात्मिका मूलप्रकृति

१-१२

[के वयम् १, मूल प्रकृति 'ह' का स्वरूप २, विश्व की उत्पत्ति ३, अहंकार का विकार-विस्तार ४, चतुर्विध-प्राणियों की उत्पत्ति ७, सवितारूप परावाक् कुण्डलिनी ६]

२. वर्णविभूति

१३-२५

[अक्षर के विभेद (मूलार्ण, अर्णविकृति, विकृति-विकृति, ह्रस्व एवं दीर्घ वर्ण, अग्निसोमात्मक अर्ण, सोम, सूर्य और अग्न्यात्मक अर्ण, पुंस्त्री एवं नपुंसक अर्ण) १३-१५, वर्ण एवं कलाएं (सौम्य कलाएं, सौर कलाएं और अग्न्यात्मक कलाएं) १६-१७, प्रणवजनित ३८ कलाएं (अकार से उत्पन्न १० ब्राह्मी कलाएं, उकार से उत्पन्न १० वैष्णवी कलाएं, मकार से उत्पन्न १० रौद्री कलाएं, बिन्दु से उत्पन्न ४ कलाएं तथा नाद से उत्पन्न १६ कलाएं) १७-१८, वर्णमूर्तियां एवं शक्तियां (स्वरजनित वैष्णव मूर्तियां, व्यंजनजनित वैष्णव मूर्तियां, स्वरजनित वैष्णव शक्तियां, व्यंजनजनित वैष्णव शक्तियां, शैव स्वर मूर्तियां, शैव हल् मूर्तियां, शैव स्वर शक्तियां, शैव हल् शक्तियां) १९-२०, वर्णौषधियां २१, विसर्ग से उत्पन्न हुए हैं सभी वर्ण २२, मन्त्ररूप वर्णों से मोहनादि प्रयोग २४]

३. मूलप्रकृति 'हृल्लेखा'

२६-३४

[हकार का विश्वयोनित्व २६, अजपा मन्त्र हंसः २६, परमात्ममन्त्र सोऽहम् २६, शक्ति के सात भेद ३०, हृल्लेखा एवं सात ग्रह ३०, वर्ण एवं राशियां ३१, वर्ण एवं नक्षत्र ३१, नक्षत्र-वृक्ष ३३]

४. दीक्षा में मण्डप-मण्डलादि का निर्माण

३५-४२

[दीक्षा का अर्थ एवं प्रकार ३५, दीक्षा-मण्डप एवं वास्तुदेव-पूजन ३६, वास्तुपूजन यन्त्र ३८, मण्डप-निर्माण ३८, बीजवपन तथा मण्डल-रचना ३९, बलि के लिये उपयुक्त पदार्थ ४०, कुण्ड निर्माण-विधि ४०]

५. दीक्षा-विधि (१)

४३-५०

[न्यासादि क्रियाएं ४३, ऋष्यादि का तात्पर्य (ऋषि, छन्दस्, देवता, बीज एवं शक्ति) ४४-४५, अंगमन्त्र एवं षडंगन्यास ४७, षडंगजातियों के अर्थ ४७, करन्यास ४९]

६. दीक्षा-विधि (२)

५१-५८

[पूजा-विधान ५१, कलश-स्थापना ५२, त्रिविध गन्धाष्टक ५२, कला-विनियोग एवं ऋक्पंचक से कुम्भपूरण ५३, प्राण-प्रतिष्ठामन्त्र ५४, पूजार्ह द्रव्य (अर्घ्य, पाद्य, आचमनीय मधुपर्क, आचमनीय, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य) ५५-५६, अंगदेवता, लोकपाल एवं उनके आयुध, आवरण-पूजा ५७]

७. अग्निस्थापन

५९-७०

[अग्नि की सात जिह्वाओं के नाम एवं वर्ण ६०, षडंगन्यास ६१, अष्टमूर्तिन्यास ६१, अग्निदेव की आवरण पूजा ६२, अग्निदेव का ध्यान ६३, अग्निदेव के गर्भाधानादि संस्कार ६४, गणपति पूजन ६४, हवन ६५, महाव्याहृति हवन ६६, ब्रह्मार्पण-विधि ६६, नक्षत्रादि बलि ६७, अष्टांग एवं पंचांग प्रणाम ६७, पूजाकार्य में प्रणाम के नियम ६८, दक्षिणा ६८, मन्त्रदान ६९]

८. वर्णाधिदेवता मातृका शक्ति

७१-८६

[वर्णतनु शारदा ७१, पराशक्ति की उपासना ७२, मातृका सरस्वती के ऋष्यादि ७२, ऋष्यादिन्यास ७३, षडंगन्यास ७३, वर्णन्यास (सृष्टिन्यास) ७४, वर्णेश्वरी का ध्यान ७५, वर्णकमल में मातृका की आवरण पूजा ७५, वर्णाब्ज के निर्माण की विधि ७६, अक्षरों के वर्ण (रंग) ७७, पद्मपाद-वर्णित वर्णकमल-उपासना ७८, मातृकाओं के कुछ प्रयोग (ब्राह्मी-वचा क्वाथ) ७८, वर्णौषधियां ८०, वर्णौषधि क्वाथ का प्रयोग ८१, त्रिलौहमुद्रिका प्रयोग ८१, त्रिलौहमुद्रिका धारण का फल ८२, वर्ण, ग्रह एवं रत्न ८२, अग्नि-सोम बीज के साथ मातृका-हवन ८४, मातृका सरस्वती की उपासना का फल ८४, मातृकादि न्यास के देवता ८५, कलादि नाम एवं मन्त्रोद्धार ८६, शक्तियुक्त श्रीकण्ठादिन्यास ८८, सप्त-धातुन्यास ८८, पंचाक्षरी एवं त्र्यक्षरी विद्यान्यास ८८, शैवोपासना में ध्यान ८८, सशक्तिकमलामारादि पंचन्यास ८९]

९. प्रपंचयाग

९०-१०६

[गणनाथ पूजन-विधि ९०, सप्तग्रह न्यास ९१, मण्डलन्यास ९२, मण्डलन्यास की अन्य विधि ९२, नवग्रह न्यास ९३, मण्डलत्रय न्यास ९३, प्रपंचयाग-मन्त्र ९४, पंचमन्त्रों द्वारा हवन-विधि ९४, अष्टाक्षर मन्त्र ९५, पंचमन्त्रों के ऋष्यादि तथा न्यास ९५, षडंगन्यास ९५, पंचमन्त्रों के स्वरूप (ओं, ह्रीं, हंसः, सोऽहम् एवं स्वाहा की निरुक्ति) एवं न्यास

६६-६७, अष्टाक्षरमन्त्र की साधना ६७, ब्रह्मादि मन्त्राक्षरों (स्वाहा, सोऽहम्, हंसः, ह्रीं, ओं तथा हरिहर) के अर्थ एवं जगन्मूल अष्टाक्षर मन्त्र ६८-६९, अष्टाक्षर मन्त्र से हवन-विधि १००, ब्रह्माग्नि में वर्ण-हवन १०१, दस प्रकार के न्यासों का फल १०२, मोक्षप्रद प्रपंचयाग १०२, प्रपंचयाग में आहुति संख्या, द्रव्य एवं समिधाएं १०२, प्रपंचयागमन्त्र के विभिन्न प्रयोग (क्षुद्रज्वरादि से मुक्ति, विस्मृति आदि से मुक्ति, अतुल समृद्धिप्राप्ति, वशीकरण) १०३-१०४, वशीकरण के लिये पुत्तलिका-प्रयोग १०५, मन्त्रसिद्ध वर्णोपधि भस्म १०५, प्रपंच याग में दक्षिणा एवं फल १०६]

१०. प्राणाग्निहोत्र साधना

१०७-१२६

[पंचाग्नि-भावना १०, कल्पान्त एवं कल्पार्काग्नि १०८, वर्णों का पंचाग्नियों में हवन-क्रम १०८, पंचभूत हवन १०९, वर्णाहुति एवं फल १०९, भोजन-क्रिया द्वारा प्राणाग्निहोत्र ११०, प्राणाग्निहोत्र के मन्त्रों का स्वरूप १११, प्राणाग्निहोत्र से मोक्ष की प्राप्ति ११२, वर्णमालिका (अक्षमाला) का स्वरूप ११३]

११. सरस्वती की साधना

११५-१२६

[सरस्वती का दशाक्षरी मन्त्र ११५, दशाक्षरी मन्त्र के ऋष्यादि एवं न्यास (ऋष्यादिन्यास, मन्त्रवर्णन्यास, अंगन्यास, स्वरपुटित हल्वर्णों से षडंगन्यास, पद्मपाद के षडंगन्यास का स्वरूप, दीपिका के अनुसार करन्यास, अंगन्यास का एक अन्य प्रकार) ११५-११७, भगवती सरस्वती का ध्यान ११८, सरस्वती की आवरण पूजा ११८, जप तथा हवन ११८, सरस्वती मन्त्र के कुछ प्रयोग ११९, वाग्देवी का एकादशाक्षरी मन्त्र १२०, मन्त्रवर्णन्यास तथा अंगन्यास १२०, सरस्वती का ध्यान एवं स्तुति १२२, जप, हवन, आवरण पूजा १२२, वागीश्वरी की अर्चना का फल १२३, शंकर-विरचित वाग्देवी स्तोत्र १२३-१२६]

१२. त्रिपुरा साधना

१२७-१४३

[त्रिपुरा के बीज (प्रथम बीज, द्वितीय बीज, तृतीय बीज) १२८-१२९, त्रिपुरा के बीजों का निर्वचन १३०, विविध न्यास (त्रिखण्ड न्यास, पंचावृत्ति न्यास) १३१-१३२, त्रिपुरा शक्ति का ध्यान १३२, त्रिपुरा मन्त्र का जप एवं हवन १३३, त्रिपुरा की आवरण पूजा १३३, नवयोनि चक्र १३४, नवयोनि चक्र में त्रिपुरा की आवरण पूजा १३५, त्रिपुरा का सावरण नवयोनियन्त्र १३६, त्रिपुरा बीजों के प्रयोग (वशीकरण के लिये

वाग्भवबीज, वशीकरण के लिये कामराज बीज, वशीकरण के लिये शाक्त बीज) १३७-१३८, त्रिकूटोपासना (सरस्वती, सौभाग्य, लक्ष्मी, आकर्षण, सम्पत्ति तथा कवित्व, वशीकरण, लोकप्रियता, जरादि रोगों से मुक्ति, लक्ष्मी की प्राप्ति, दुःखनाश, प्रभूत ऐश्वर्य की प्राप्ति, कवित्व, वशीकरण, जनन-मरण से मुक्ति) १३८-१४२, विद्येश्वरी त्रिपुरा की साधना एवं फल १४२]

१३. मूलप्रकृति भुवनेश्वरी

१४४-१६३

[भुवनेश्वरी का मन्त्र १४४, भुवनेश्वरी मन्त्र के ऋष्यादि १४५, षडंग न्यास १४६, भुवनेश्वरी साधना में न्यास के रूप (ऋष्यादि न्यास, षडंग न्यास) १४५-१४६, संहारन्यास (भूतशुद्धि) १४६, संहारन्यास की विधि १४६, सृष्टिन्यास १४८, भुवनेश्वरी का ध्यान १४९, पाशांकुशादि के अर्थ (पाश, अंकुश, अभय, वर) १५०, त्रिगुणित यन्त्र के निर्माण की विधि १५०, भुवनेश्वरी का त्रिगुणित यन्त्र एवं आवरण पूजा १५२, कलश-स्थापन १५३, ओंकारोद्भव पंच ऋचाएं एवं पंचगव्य संयोजन १५४, एकघटीय आवरण-पूजा १५५, नौ एवं पंचकलशीय आवरण-पूजा १५७, साधना के नियम-जप-हवन-संख्यादि १५७, अभिमन्त्रित जल से अभिषेक १५८, भुवनेश्वरी का षड्गुणित यन्त्र १६०, भुवनेश्वरी की आवरण-पूजा १६२, भुवनेश्वरी की उपासना का फल १६२]

१४. द्वादशगुणित यन्त्र और भुवनेश्वरी

१६४-१७६

[भुवनेश्वरी का द्वादशगुणित यन्त्र १६५, भुवनेश्वरी की अष्टावरण-पूजा १६६, द्वादशगुणित यन्त्र में पूज्य शक्तियों के नाम (हृल्लेखाद्य पंच शक्तियां, ब्रह्माणी आदि अष्ट शक्तियां, कराल्यादि सोलह शक्तियां, विद्यादि बत्तीस शक्तिया, पिंगलाक्षी आदि चौसठ शक्तियां) इन्द्रादि दस लोकपाल, वज्रादि दस आयुध, जलाभिषेक १६७-१६८, घटार्गल यन्त्र में शक्ति-पूजा १६८, घटार्गल यन्त्र निर्माण-विधि १७१, पाश और अंकुश बीज १७१, भुवनेश्वरी का घटार्गल यन्त्र १७२, भुवनेश्वरी का अष्टार्ण मन्त्र, भुवनेश्वरी का षोडशार्ण मन्त्र १७३, घटार्गल यन्त्र में भुवनेश्वरी की पूजा १७३, भुवनेश्वरी मन्त्र के प्रयोग (कवित्वशक्ति, कान्ति, लक्ष्मी तथा लोकरंजन, वशीकरण) १७४-१७५, शंकरकृत भुवनेश्वरी की स्तुति १७५]

१५. महालक्ष्मी साधना

१८०-१८५

[श्री मन्त्र का स्वरूप १८०, 'श्री' मन्त्र के न्यासादि (ऋष्यादि न्यास, षडंगन्यास) १८०-१८१, रमा का ध्यान १८१, जप एवं हवन १८२,

चतुरावरण श्रीपूजन यन्त्र १८३, श्री बीजात्मक चतुर्व्यूह रमा यन्त्र १८५, श्री मन्त्र के विभिन्न प्रयोग (समृद्धि के लिए, वशीकरण, समग्र लक्ष्मी की प्राप्ति, महालक्ष्मी के दर्शन) १८६-१८७, कमलवासिनी रमा मन्त्र १८८, न्यासादिविधान (ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास) १८८, कमलवासिनी रमा का ध्यान १८९, रमा की आवरण पूजा १८९, त्र्यावरण कमलवासिनी यन्त्र १९०, रमामन्त्र के प्रयोग (मेधा-प्राप्ति, धन-प्राप्ति, सर्वातिशय धनी, अतिसमृद्धि) १९०-१९१, इन्दिरालक्ष्मी मन्त्र १९१, षडंगन्यास १९२, इन्दिरालक्ष्मी का ध्यान १९२, इन्दिरा की आवरण-पूजा १९३, इन्दिरालक्ष्मी यन्त्र १९४, जप तथा आहुति का फल १९५]

१६. श्रीसूक्त साधना

१९६-२१०

[श्रीसूक्त-साधकों की परम्परा १९६, श्रीसूक्त के ऋष्यादि तथा न्यास (मन्त्रन्यास, षडंगन्यास) १९७-१९९, श्रीसूक्त की ऋचाओं के विनियोग एवं न्यासादि १९९, महालक्ष्मी का ध्यान २०३, श्रीसूक्त साधना-विधि २०३, श्री की आवरण पूजा २०४, चतुरावरण श्रीपूजा-यन्त्र २०५, आवाहन एवं हवनादि २०५, श्री साधना में प्रयुक्त पुष्पादि २०६, श्रीसूक्त की ऋचाओं की विशेष प्रयोग-विधि (पन्द्रहवीं ऋचा का प्रयोग, चतुर्थ ऋचा का प्रयोग) २०७, श्री के बत्तीस नाम एवं उपासना-विधि २०८, श्रीसूक्त साधना में विधि-निषेध २०९]

१७. त्रिपुटा साधना

२११-२१५

[त्रिपुटा का स्वरूप २११, त्रिपुटा का मन्त्र एवं न्यास (ऋष्यादिन्यास, अंगन्यास) २११, त्रिपुटा का ध्यान एवं जपादि २१२, त्रिपुटा की आवरण पूजा २१३, त्रिपुटा की आभ्यन्तर साधना २१३, सावरण त्रिपुटा यन्त्र २१४]

१८. धरामन्त्र साधना

२१६-२१९

[धरा मन्त्र एवं मन्त्र के न्यासादि २१६, धरादेवी का ध्यान २१७, पूजापीठ २१७, जप, हवन एवं प्रयोग (गोधन-भूमिप्राप्ति, शस्यश्यामला भूमिप्राप्ति, धन-पुत्रादि की प्राप्ति) २१८]

१९. त्वरितामन्त्र साधना

२२०-२३५

[त्वरिता के मन्त्र का स्वरूप २२०, मन्त्र का षडंगन्यास एवं मन्त्रवर्णन्यास २२१, त्वरिता का ध्यान, जप एवं हवन २२२, त्वरिता की आवरण पूजा २२३, सावरण त्वरिता यन्त्र २२४, त्वरिता-साधना में विघ्न २२५, हवन-द्रव्य २२५, त्वरिता मन्त्र के प्रयोग २२६, द्वादशरेखात्मक

निग्रह-यन्त्र २२७, दशरेखात्मक निग्रह-यन्त्र २२८, कालीमन्त्र तथा यममन्त्र २२९, निग्रह-यन्त्र का मारण प्रयोग २२९ त्वरिता का दशरेखात्मक अनुग्रह-यन्त्र २३१, यन्त्र लेखन के द्रव्यादि २३१, द्वितीय अनुग्रह यन्त्र की निर्माण-विधि २३३, नौ रेखात्मक अनुग्रह-यन्त्र २३४, श्रीकर त्वरिता यन्त्र २३४, त्वरिता यन्त्र के विभिन्न प्रयोग २३५]

२०. वज्रप्रस्तारिणी नित्या साधना २३६-२४०

[नित्या के मन्त्र का स्वरूप २३६, ऋष्यादि एवं विभिन्न न्यास २३६, नित्या का ध्यान २३८, जप तथा आहुति २३८, आवरण पूजा २३८, सावरण नित्या यन्त्र २३९, नित्या की साधना का फल २३९]

२१. नित्यक्लिन्नामन्त्र साधना २४१-२४४

[नित्यक्लिन्ना के मन्त्र का स्वरूप एवं विभिन्न न्यास २४१, नित्यक्लिन्ना का ध्यान २४२, जप-हवन एवं आवरण पूजा २४२, नित्यक्लिन्ना मन्त्र के विभिन्न प्रयोग २४३, सर्वार्थ साधक नित्यक्लिन्ना यन्त्र २४४]

२२. दुर्गामन्त्र साधना २४५-२५२

[दुर्गामन्त्र का ऋष्यादि तथा विभिन्न न्यास २४५, दुर्गा का ध्यान २४६, जप एवं हवन २४७, दुर्गा की आवरण-पूजा २४७, सावरण दुर्गापूजन यन्त्र २४८, सावरण दुर्गापूजन यन्त्र (पद्मपादानुसार) २४९, दुर्गा की शक्तियाँ एवं आयुध २५०, अष्टदल कमल में आवरण पूजा २५१, मन्त्र की सिद्धि एवं फल २५२]

२३. वनदुर्गामन्त्र साधना २५३-२६४

[वनदुर्गा के मन्त्र का स्वरूप, मन्त्र के ऋष्यादि एवं न्यास (ऋष्यादिन्यास, षडंग न्यास, मन्त्राक्षर न्यास) २५३-३५४, वनदुर्गा का ध्यान २५५, उद्देश्य-भेद से ध्यान-भेद २५६, जप-हवन एवं आवरण पूजा २५७, वनदुर्गा मन्त्र के विभिन्न प्रयोग २५७, सावरण वनदुर्गा यन्त्र २५७, विभिन्न प्रयोग (अपस्मार से मुक्ति, ग्रहादि-शान्ति, कामनाओं की पूर्ति, शत्रुसेना पर विजय, लोक-तिरस्कार, उच्चाटन, स्तम्भन, मारण, उन्मादन और उससे मुक्ति, शत्रु-विनाश एवं उच्चाटन) २५९-२६१, गजाश्व-प्रकरण २६२, राष्ट्रादि की रक्षा २६३, वशीकरण के लिये प्रतिकृति-प्रयोग २६३, विभिन्न द्रव्यों के हवन के विभिन्न फल २६४]

२४. शूलिनीदुर्गामन्त्र साधना २६५-२७२

[शूलिनी-मन्त्र का स्वरूप २६५, ऋष्यादि न्यास एवं अंगविधि २६५, पंचांगन्यास, २६५, रक्षाकारक पंचांगन्यास २६६, शूलिनीदुर्गा का ध्यान

एवं आवरण पूजा २६७, सावरण शूलिनीदुर्गा यन्त्र २६८, शूलिनी-मन्त्र के विभिन्न प्रयोग (उन्मादादि रोग से मुक्ति, दुष्टग्रहों से मुक्ति, सर्पभयादि से मुक्ति, भय से मुक्ति तथा मारण-प्रयोग, शत्रुसेना पर विजय, शत्रु पर मारण-प्रयोग, शक्तिप्राप्ति एवं कामनापूर्ति, मित्रभेद, स्तम्भन तथा वशीकरण) २६९-२७१]

२५. भुवनेश्वरी साधना

२७३-२८०

[सूर्यरूपा भुवनेश्वरी मन्त्र २७३, ऋष्यादि एवं न्यास २७४, ध्यान एवं आवरणपूजा २७५, अजपा मन्त्र साधना २७८, अजपा के ऋष्यादि एवं न्यास २७९, ध्यान, जप, हवन एवं आवरण-पूजा २७९, 'हंस' मन्त्र की प्रतिलोम साधना २८०, सोऽहं साधना २८१, अजपा का विशेष प्रयोग २८१, प्रयोजन तिलकमन्त्र की साधना २८२, न्यास (ऋष्यादिन्यास, मण्डलन्यास, षडंगन्यास) २८३, सूर्य का ध्यान, जप-हवन २८३, आवरण-पूजा २८४, प्रयोजनानुसार प्रयोग २८५, अष्टाक्षर सूर्यमन्त्र २८७, अष्टाक्षर सूर्यमन्त्र के न्यासादि (ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास, पंचांगन्यास और अक्षरन्यास) २८७-२८८, भगवान् सूर्य का ध्यान २८९, जप-हवन तथा आवरणपूजा २८९]

२६. सोम एवं अग्निमन्त्र साधना

२९१-३०७

[सोममन्त्र २९१, न्यासादि, जप-हवन एवं ध्यान २९२, आवरणपूजा २९३, सोममन्त्र के विविध प्रयोग (अकालमृत्यु से मुक्ति, रोग-शान्ति, लक्ष्मी-प्राप्ति) २९४, चन्द्रमन्त्र-साधना की विशेष विधि २९५, अभिलषित वर-कन्या एवं ऐश्वर्य-प्राप्ति २९६, अग्निमन्त्र साधना २९६, ऋष्यादि एवं न्यास २९७, ध्यान, जप-हवन एवं आवरण-पूजा २९८, अग्निमन्त्र के विविध प्रयोग (लक्ष्मी की प्राप्ति, पशुधन एवं धान्यादि की प्राप्ति, अन्न-समृद्धि, महालक्ष्मी की प्राप्ति एवं महासिद्धि की प्राप्ति) २९९, द्वितीय अग्निमन्त्र ३००, न्यास तथा ध्यान ३००, अग्निदेव की विशेष साधना ३०१, अग्निमन्त्र के विविध प्रयोग (महासमृद्धि की प्राप्ति, यश और लक्ष्मी की प्राप्ति) ३०२, अग्निदेव का तृतीय मन्त्र ३०३, न्यासादि ध्यान ३०३, जप-हवन एवं आवरणपूजा ३०४, अग्निमन्त्र के प्रयोग एवं फल (इन्दिरा लक्ष्मी की प्राप्ति, लक्ष्मी की प्राप्ति, अकूत लक्ष्मी की प्राप्ति, महालक्ष्मी की प्राप्ति, विषमज्वर से मुक्ति, ज्वर एवं ग्रहबाधा से मुक्ति, अकालमृत्यु से बचाव, पाचनक्रिया में वृद्धि एवं निर्धनता से मुक्ति) ३०५-३०७]

२७. महागणपतिमन्त्र साधना**३०८-३२४**

[गणपतिमन्त्र ३०८, ऋष्यादि, विनियोग तथा न्यास ३०८, गणपति का ध्यान ३०९, गणपति का एक अन्य ध्यान ३११, जप एवं हवन ३१२, आवरण-पूजा ३१२, दीक्षाविधि ३१३, विभिन्न फलों की प्राप्ति के लिये गणपति मन्त्र के प्रयोग (स्वर्णादि प्राप्ति हेतु, वशीकरण के लिये) ३१४, गणपति का चतुरावृत्ति तर्पण ३१५, स्तम्भनकर पृथ्वी बीज ३१७, गणपति का चतुरक्षर मन्त्र ३१७, न्यासादि, ध्यान तथा जप-हवन, आवरणपूजा ३१७-३१८, गणपति मन्त्र के विभिन्न प्रयोग (सर्ववश्य-साधना, कन्या या वर तथा लक्ष्म्यादि की प्राप्ति के लिये, संवाद-सिद्धि, अभिलषित की प्राप्ति एवं वशीकरण) ३१९, क्षिप्रगणपति मन्त्र ३२१, न्यासादि, ध्यान, जप-हवन एवं आवरण पूजा ३२१, क्षिप्रगणपति मन्त्र के प्रयोग (लक्ष्मी-वशीकरण, गृहस्थी की सफलता, लक्ष्मी की प्राप्ति) ३२३, गणपति का भावपूर्ण तर्पण ३२४]

२८. मदनमन्त्र साधना**३२५-३४०**

[काममन्त्र ३२५, काममन्त्र के ऋष्यादि एवं न्यास ३२६, ध्यान, जप-हवन ३२६, कामयन्त्र में आवरणपूजा ३२७, वशीकरण काम मन्त्र ३२६, जगन्मोहन कामार्चना-विधान ३२८, सप्तावरण कामार्चना यन्त्र ३२८, काम की अन्तरंग साधना ३३२, वशीकरण प्रयोग ३३३, वाग्बीजयुक्त काम यन्त्र ३३४, ऊर्ध्वरेतस् साधना ३३५, काम साधना की अन्य विधियां ३३५, कृष्णमन्त्र की साधना ३३५, कृष्णमन्त्र के ऋष्यादि, न्यास, ध्यान, जप-पूजादि ३३७, कृष्णमन्त्र के विविध प्रयोग ३३९]

२९. प्रणवमन्त्र साधना**३४१-३५६**

[प्रणव मन्त्र का स्वरूप ३४१, प्रणव मन्त्र के न्यासादि ३४२, प्रणव-साधना में ध्यान, जप-हवन ३४३, प्रणव की पंचावरण-पूजा ३४४, प्रणव साधना और योग ३४५, योग की परिभाषा और अंग (योगासन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि) ३४५-३४७, प्राणायाम से भूतसिद्धि ३४८, योग साधना की विधि ३४९, ओंकार के दस नाम ३५०, ओंकार साधना की सात विधियां ३५१, उक्त्रान्ति (परकाया-प्रवेश) की विधि ३५४, कालवंचना योग ३५४, योगसिद्धि के सूचक संकेत एवं सिद्धियां ३५५]

३०. अष्टाक्षरमन्त्र साधना**३५७-३७०**

[अष्टाक्षरमन्त्र का स्वरूप एवं न्यासादि (ऋष्यादि न्यास, अष्टांगन्यास

एवं ध्यान) ३५७, योगपीठ एवं पीठपूजा ३५६, दशावृत्तिन्यास एवं चतुर्भुक्तिन्यास ३६०, द्वादश स्वर, आदित्य एवं विष्णुभुक्तिन्यास ३६२, पंचावरण विष्णुपूजा विधान ३६३, जप एवं हवन ३६५, अष्टाक्षरज मूर्ति पूजा विधान (प्रणवज मूर्ति पूजा विधान, नकारजमूर्ति पूजा-विधान, मोकारजमूर्ति पूजा-विधान, नाजमूर्ति पूजा-विधान, राजमूर्ति पूजा-विधान, यजमूर्ति पूजा-विधान, णाजमूर्ति पूजा-विधान यजमूर्ति पूजा-विधान) ३६७-३७०]

३१. मेषादि मासयन्त्र

३७१-३६५

[वैष्णव-विधान में मेषादि यन्त्रों के स्वरूप ३७१, चर, स्थिर एवं उभयात्मक राशिवां एवं उनके यन्त्र ३७२, मेषादि राशि-यन्त्रों के मध्य अंकित केशवादि मूर्तियों के स्वरूप ३७३, द्वादश स्वर-युक्त द्वादशाक्षर मन्त्र एवं उनके मूलमन्त्र केशवादि द्वादशमूर्तियों के गायत्री मन्त्र ३७४, मूर्तियों एवं आदित्यों का योग-क्रम ३७५, आवरण पूजा ३७५, मेष-यन्त्र एवं आवरण-पूजा ३७६, वृष-यन्त्र एवं आवरण-पूजा ३७७, मिथुन-यन्त्र एवं आवरण-पूजा ३७८, कर्कट-यन्त्र एवं आवरण-पूजा ३७९, सिंह-यन्त्र एवं आवरण-पूजा ३८०, कन्या-यन्त्र एवं आवरण-पूजा ३८१, तुला-यन्त्र एवं आवरण पूजा ३८२, वृश्चिक-यन्त्र एवं आवरण-पूजा ३८३, धनु-यन्त्र एवं आवरण पूजा ३८४, मकर-यन्त्र एवं आवरणपूजा ३८५, कुम्भ-यन्त्र एवं आवरण पूजा ३८६, मीन-यन्त्र एवं आवरण पूजा ३८७, मेषादियन्त्र-विधान का फल ३८९, श्रीविष्णुस्तोत्र ३९२, मेषादि यन्त्रों में विष्णुपूजन का फल ३९५]

३२. द्वादशाक्षरमन्त्र साधना

३९६-४०६

[द्वादशाक्षर मन्त्र, न्यास, ध्यान, जप-हवन तथा आवरण-पूजा ३९६-३९७, सुदर्शन मन्त्र ३९८, ऋष्यादि, न्यास, ध्यान, जप-हवन सुदर्शन गायत्री एवं रक्षामन्त्र ३९९, चक्रयन्त्र एवं आवरण-पूजा, ४००, मन्त्रदान-विधि, मन्त्रजप हवन ४०१, चक्र होम यन्त्र एवं हवन विधि ४०३, अष्टम राशि ४०४, महाचक्र होम ४०४, सर्वार्थप्रद भस्म ४०४, चक्रमन्त्र के विभिन्न प्रयोग (उपद्रव-शान्ति, ज्वर, विस्मृति-अपस्मृत्यादि से मुक्ति, समृद्धि तथा दीर्घायु, युद्ध में विजय, आविष्ट भूत-ग्रहादि से मुक्ति, शत्रु-मारण, उच्चाटन और मारण तथा मारण-प्रयोग से बचाव) ४०५, रक्षाकर यन्त्र ४०७, रक्षाकर अन्य यन्त्र ४०८, सप्तकोष्ठक यन्त्र ४०८, पद्मपादानुसार सप्तकोष्ठक यन्त्र ४०८, सप्तकोष्ठकयन्त्र की प्रयोग-विधि ४०९]

३३. पुरुषोत्तम विधान

४१०-४२४

[त्रैलोक्यमोहन मन्त्र ४१०, मन्त्र के सम्बोधनान्त एवं आज्ञावाचक-पदों के अन्त में 'पुरुष' आदि नामों का प्रयोग ४१२, द्वादशांग मन्त्रों के आज्ञा वाचक पदों का प्रयोगक्रम ४१३, आज्ञावाचक पदों के प्रयोग के नियम ४१३, त्रैलोक्यमोहन मन्त्र के ऋष्यादि एवं न्यास, पूजा के नियम तथा मन्त्र (पुरुषोत्तम पूजन-मन्त्र, चक्रशंखादि पूजन-मन्त्र) ४१५, लक्ष्म्यादि की पूजा के मन्त्र ४१६, पुरुषोत्तम का ध्यान ४१७, श्रीसहित पुरुषोत्तम का ध्यान ४१८, सुरसुन्दरियों का ध्यान ४१८, पुरुषोत्तम मन्त्र के प्रयोग का अधिकार ४१९, पुरुषोत्तम की आवरण-पूजा ४२०, त्रैलोक्यमोहन मन्त्र के विभिन्न प्रयोग, (सौन्दर्य-प्राप्ति तथा रोग से मुक्ति, निर्धनता से मुक्ति, स्त्री-वशीकरण, शासक-वशीकरण, अपहृत धन की पुनःप्राप्ति, मारण-प्रयोग, अद्भुत गुलिका की प्राप्ति) ४२१-४२३]

३४. श्रीकरमन्त्र साधना

४२५-४३६

[श्रीकरमन्त्र एवं न्यास (ऋष्यादिन्यास, पंचांगन्यास, अक्षरन्यास, ब्राह्मणादिन्यास) ४२५, ध्यान एवं आवरणपूजा ४२७, श्रीकर मन्त्र के विभिन्न प्रयोग (अकालमृत्यु तथा रोग से मुक्ति, अन्न-समृद्धि, इष्टमित्रादि-समृद्धि) ४२८, वराहमन्त्र साधना ४२९, वराहमन्त्र, ऋष्यादि एवं न्यास ४२९, वराह का ध्यान ४३०, मूलाधारादि चक्रों में वराह का ध्यान ४३१, वराह की आवरणपूजा ४३१, वराह यन्त्र के निर्माण की विधि ४३२, वराह मन्त्र के प्रयोग (भूसमृद्धि की प्राप्ति, धन-धरा तथा इन्दिरा की प्राप्ति) ४३३, भूगृहादि में वराह के ध्यान के फल ४३३, क्षेत्र-विवाद की शान्ति ४३४, वराह मन्त्र के अन्य प्रयोग (भू-विवाद एवं भूतादिजनित बाधाओं का शमन, बहुमूल्य भूमि की प्राप्ति, गृहस्थ जीवन की सफलता, अन्न-समृद्धि, अभिलाषाओं की प्राप्ति) ४३४, एकाक्षर वराह- मन्त्र एवं साधना-विधि ४३६, वराह यन्त्र एवं यन्त्रलेखन सामग्री ४३७, वराह यन्त्र-स्थापना ४३८]

३५. नृसिंहमन्त्र साधना

४४०-४५६

[नृसिंह मन्त्र ऋष्यादि तथा न्यास (ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास तथा अक्षरन्यास) ४४०, प्रसन्न नृसिंह का ध्यान ४४२, क्रूर प्रयोगों में नृसिंह का ध्यान ४४३, आवरणपूजा तथा जप-हवनादि ४४३, नृसिंह मन्त्र का मृत्युंजय प्रयोग ४४४, एकाक्षर नृसिंहमन्त्र तथा न्यासादि ४४५, नृसिंह बीज 'क्षौं' के प्रयोग (उपद्रव-शान्ति, दुःस्वप्न, भयमुक्ति, सर्पभय से

मुक्ति, मूषकादि-विष-हरण, उच्चाटन, मारण, परराष्ट्र-विजय, लक्ष्मी, पुत्र तथा दीर्घायु, मेधा की प्राप्ति) ४४५-४५०, नृसिंह षडक्षरमन्त्र ऋष्यादि तथा न्यास ४५०, ध्यान तथा नृसिंह यन्त्र निर्माण की विधि ४५१, नृसिंह-यन्त्र ४५२, जप-हवनादि ४५४, नृसिंह मन्त्र के प्रयोग (भूतबाधा की समाप्ति, ज्वर से मुक्ति, शिरोरोगादि से मुक्ति, धन-धान्य समृद्धि, लक्ष्मी तथा दीर्घायु की प्राप्ति, अभिलषित कन्या या वर की प्राप्ति, ग्रह-शान्ति, नीरोग तथा सुखी जीवन) ४५४-४५६]

३६. विष्णुपंजर-विधान

४५७-४७५

[विष्णुपंजर(विश्वरूप) यन्त्र के निर्माण की विधि ४५७, चक्रादि के निजमन्त्र (वर्मास्त्रान्त चार मन्त्र, स्वाहान्त चार मन्त्र, नमोऽन्त आठ मन्त्र) ४५८, त्रिष्टुब्, अनुष्टुब् तथा गायत्री मन्त्र ४६१, विश्वरूप-यन्त्र में विश्वरूप विष्णु का आवरण पूजन ४६१, चक्रादि के स्वरूप का ध्यान और पूजन (चक्र, गदा, शार्ङ्ग, खड्ग, शङ्ख, हल, मुसल, शूल तथा दण्डादि आयुधों के स्वरूप) ४६२, महावराह का स्वरूप ४६४, महानृसिंह का स्वरूप ४६४, केशवादि मूर्तियों तथा इन्द्रादि दिक्पालों की अर्चना एवं हवनादि-विधि ४६५, विष्णुपंजर मन्त्र तथा न्यास (ऋष्यादिन्यास, पंचांगन्यास, त्रिमन्त्रन्यास, गीतामन्त्रन्यास, विश्वरूप षोडशाक्षरमन्त्रन्यास, विंशतिगाथामन्त्रन्यास) ४६६, गाथा का स्वरूप ४६६, विश्वरूप विष्णुमन्त्र की साधना-विधि ४७१, नगरादि का रक्षा-विधान ४७२]

३७. प्रासादमन्त्र साधना

४७६-४८५

[शिव का एकाक्षर मन्त्र एवं न्यास (ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास, ईशानादि पंचमन्त्रों से करन्यास, ईशानादि पंचमन्त्रों से पंचांगन्यास) ४७६, प्रासाद-मन्त्र-साधना में ध्यान ४७८, जप-हवन ४७८, आवरण पूजा ४७८, प्रासाद-यन्त्र (पद्मपादानुसार) ४८०, ईशानादि पंचदेवों के स्वरूप एवं आवरणपूजा ४८१, पांचब्रह्म विधान ४८२ पंचब्रह्म मन्त्रों के ऋष्यादि एवं न्यास (ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास, अष्टत्रिंशत्कलान्यास एवं ईशानादि की कलाएं) ४८२, आवरण पूजा ४८६, पंचाक्षर एवं षडक्षर शिवमन्त्र ४८७, पंचाक्षर मन्त्र के न्यासों का स्वरूप (ऋष्यादि, पंचांगन्यास, षडंगन्यास, अंगुल्यादिन्यास, देहन्यास, वक्त्रन्यास) ४८८, ध्यान, जप-हवन एवं आवरण-पूजा ४८८, स्वदेहरूपी पीठ में दशधा गोलकन्यास ४८०, शिवस्तुति ४८२, ईश का पंचावरण विधान तथा ध्यान ४८३, अष्टाक्षर शिवमन्त्र विधान ४८४, ध्यान, जप-हवन, आवरणपूजा ४८५]

३८. दक्षिणामूर्तिमन्त्र साधना**४६६-५०४**

[दक्षिणामूर्ति मन्त्र एवं न्यास (ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास, अक्षरन्यास) ४६६, ध्यान, जप-हवन एवं आवरणपूजा ४६७, अघोरमन्त्र एवं न्यासादि (ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास देहन्यास) ४६८, अघोर का ध्यान, जप-हवन एवं आवरणपूजा ५००, अघोरमन्त्र के प्रयोग (भूतादि तथा अपस्मार से मुक्ति, ग्रहपीडा से मुक्ति, प्रतिकूल ग्रहों की शान्ति) ५०२, अघोर यन्त्र ५०३]

३९. मृत्युंजय विधान**५०५-५१३**

[मृत्युंजय मन्त्र एवं न्यास (ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास) ५०५, ध्यान, जप-हवन एवं आवरणपूजा ५०५, 'ओं' प्रधान त्र्यक्षरी साधना ५०६, मृत्युंजय यन्त्र ५०८, 'जूं' प्रधान त्र्यक्षरी साधना ५१०, 'सः' प्रधान त्र्यक्षरी साधना ५१०, मृत्युंजय मन्त्र के प्रयोग (लक्ष्मी एवं आरोग्य-प्राप्ति, अभिचार एवं ज्वरादि से मुक्ति, जन्म-नक्षत्र में विशेष हवन से अपमृत्यु आदि से मुक्ति एवं अकालमृत्यु पर विजय) ५११]

४०. चिन्तामणिमन्त्र साधना**५१४-५२६**

[चिन्तामणि मन्त्र एवं न्यास (ऋष्यादिन्यास, षडंगन्यास) ५१४, उमेश का ध्यान ५१४, अर्धनारीश्वर का ध्यान ५१५, जप-हवन एवं आवरणपूजा ५१५, चिन्तामणि मन्त्र के प्रयोग (ऊर्जादि का आवेश, अपमृत्यु-ज्वरादि, भूतादि आवेश से मुक्ति, अभिचार-प्रयोग, रोगमुक्ति, आकर्षण, वशीकरण, रेतःस्तम्भन, शुक्र या रजःस्त्रावादि के विविध प्रयोग) ५१६-५२२, सर्वरक्षाकर यन्त्र के निर्माण की विधि आदि ५२३, चण्डेश्वरमन्त्र-विधान ५२६, चण्डेश्वर मन्त्र, न्यासादि ५२६, ध्यान, जप-हवन, आवरणपूजा ५२७, चण्डेश्वर मन्त्र के कुछ प्रयोग (वशीकरण, आवास-प्राप्ति, वशीकरण का पुत्तलिका-प्रयोग) ५२८]

४१. गायत्रीमन्त्र साधना**५३०-५३६**

[गायत्री मन्त्र एवं गायत्री-साधना का अधिकार ५३०, ओं एवं सप्त व्याहृतियों के अर्थ ५३१, गायत्रीशिरः मन्त्र ५३४, गायत्रीमन्त्र के ऋष्यादि, ध्यान, आवरण-पूजा ५३६, पुरश्चरण-हवन ५३७, गायत्री मन्त्र के प्रयोग (मोक्ष-प्राप्ति, दीर्घायु-प्राप्ति, लक्ष्मी-प्राप्ति, अन्न-प्राप्ति) ५३८, ब्रह्मवर्चस्-प्राप्ति ५३६]

४२. त्रिष्टुब् साधना-विधान**५४०-५५६**

[त्रिष्टुब् मन्त्र एवं न्यासादि (ऋष्यादिन्यास एवं षडंगन्यास) ५४०,

त्रिष्टुब् के पाद ५४१, त्रिष्टुब् के वर्णों और पदों का न्यास ५४२, कात्यायनी दुर्गा का ध्यान ५४३, त्रिष्टुभा शक्ति की आवरणपूजा ५४३, जप एवं हवन ५४५, अस्त्रमन्त्र-साधना (विलोम पाठ, त्रिष्टुब् के देवता) ५४६, दिनास्त्र की प्रयोग-विधि ५४८, कृत्यास्त्र की प्रयोग-विधि ५४६, त्रिष्टुब् के विभिन्न प्रयोग (स्तम्भन, वशीकरण, विद्वेषण, उच्चाटन, विमोहन, मारण, ज्वर-पीडन, ज्वर-ताडन और वशीकरण, उच्चाटन, परकृत्या-निकृन्तन, द्रावण एवं रक्षण) ५५०-५५६ भू-विवादशमन यन्त्र ५५६, सीमारक्षा-प्रयोग ५५७, समृद्धिलक्ष्मी-प्राप्ति-प्रयोग ५५६]

४३. लवणमन्त्र साधना

५६०-५७१

[अथर्वोक्त पंचऋचात्मक लवण मन्त्र ५६०, लवणमन्त्र के ऋष्यादि एवं न्यास ५६१, मन्त्र के देवताओं (अग्नि, रात्रि, दुर्गा, भद्रकाली) के स्वरूप ५६२, लवण मन्त्र के प्रयोग की अर्हता-प्राप्ति के लिये करणीय साधना ५६३, मन्त्र देवताओं की स्तुति ५६६, प्रतिकृति-छेदन तथा हवन ५६७, गुरु-दक्षिणा ५६८, लवण मन्त्र के आभिचारिक प्रयोग ५६८, कृत्यास्त्र-निवर्तन-मन्त्र ५६६, एकादश बलि-मन्त्र ५७०]

४४. अनुष्टुप् मन्त्र साधना-विधि

५७२-५८३

[अनुष्टुब् मन्त्र एवं न्यास (ऋष्यादिन्यास, अक्षरन्यास, पदन्यास) ५७२, त्र्यम्बक पार्वतीपति का ध्यान एवं आवरणपूजा ५७५, अनुष्टुब् मन्त्र के विभिन्न प्रयोग (लक्ष्मी की प्राप्ति, पापों से मुक्ति आदि) ५७७, शताक्षरी मन्त्र एवं न्यासादि ५७८, तेजस्त्रयीरूपा कुण्डलिनी का ध्यान ५८०, जप-हवन तथा आवरणपूजा ५८०, शताक्षरी-मन्त्र के प्रयोग (लक्ष्मी-प्राप्ति, दीर्घायु, लौकिक-पारलौकिक सिद्धियाँ) ५८१, कामनानुरूप शताक्षरी का जप ५८२]

४५. संवादसूक्त-विधान

५८४-५९१

[संवाद सूक्त की चार ऋचाएं ५८४, संवादसूक्त के ऋष्यादि तथा न्यास ५८४, संवादसूक्त के देवता (अग्नि) का ध्यान ५८५, जप, हवन एवं आवरणपूजा ५८५, संवादसूक्त के प्रयोग ५८६, वारुणी ऋग् विधान ५८७, वारुणी ऋचा एवं न्यासादि ५८७, ध्यान एवं आवरणपूजा ५८८, वारुणी ऋचा के विशिष्ट प्रयोग ५८६]

४६. यन्त्र-विरचना और प्रयोग

५९२-६००

[त्रिगुणित यन्त्र के प्रयोग (सिर-पीडा तथा ज्वरादि की निवृत्ति, वशीकरण-प्रयोग) ५९२, षड्गुणित यन्त्र के प्रयोग (प्रियता-प्राप्ति,

ग्रह-भूतादिजन्य पीडा-निवृत्ति, गर्भरक्षा) ५६४, द्वादशगुणितयन्त्र में प्रयोग (उपलपातादि से रक्षा) ५६५, वनिताकर्षण-यन्त्र ५६६, विविध प्रयोजन-सिद्धि के प्रयोग ५६७, नारी आकर्षण-यन्त्र ५६८, नारी-मोहन-यन्त्र ५६९, वशीकरण यन्त्र ५६९, अन्योन्य वशीकरण यन्त्र ५६९, साध्यावशीकरण यन्त्र ६००]

४७. विभिन्न देवमन्त्र

६०१-६१५

[ब्रह्मश्री मन्त्र (ऋष्यादि, न्यास, ध्यान) ६०१, जप-हवन एवं आवरणपूजा ६०२, राजमुखीमन्त्र साधना ६०३, जप-हवन एवं आवरणपूजा ६०३, अन्नप्रदायक मन्त्र (ऋष्यादि, न्यास, ध्यान) ६०४, जप-हवन एवं आवरण पूजा ६०४, अन्नपूर्णमन्त्र (ऋष्यादि, न्यास, ध्यान) ६०६, जप-हवन एवं आवरणपूजा ६०६, कुबेर मन्त्र (ध्यान, जप-हवन एवं आवरणपूजा) ६०६, देवगुरु बृहस्पति मन्त्र, ऋष्यादि, न्यास, ध्यान, जप-हवन एवं आवरण-पूजा ६०८, असुर गुरु शुक्र मन्त्र, ऋष्यादि, न्यास, ध्यान, जप-हवन एवं आवरण-पूजा ६०८, वेदव्यास मन्त्र, ऋष्यादि, न्यास, ध्यान, जप-हवनादि ६०९, संकोचक मन्त्र, ऋष्यादि, न्यास, ध्यान, जप-हवन ६११, अश्वारूढा मन्त्र, ऋष्यादि, न्यास ६१२, ध्यान, जप-हवनादि ६१३, अश्वारूढा का सर्ववश्य यन्त्र ६१४, अमठ न्यास ६१५]

४८. प्राणशक्ति-साधना

६१६-६२४

[प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र, ऋष्यादि, न्यास (ऋष्यादिन्यास, अंगन्यास, बीजत्रयन्यास, धातुन्यास, हंसन्यास तथा व्यापकन्यास) ६१६, ध्यान, जप-हवन एवं आवरणपूजा ६१६, मृतादि प्राणदूतियां और पुत्तली में उनकी स्थापन-विधि ६२०, मारण-कर्म के प्रयोग में प्राणप्रतिष्ठा मन्त्र प्रयोग-विधि ६२२, मृतादि प्राण-दूतियों में भृंग-भंगी-भावना ६२२, साध्य को जन्मान्तर तक वश में रखने की प्रयोग-विधि ६२३, वशीकरण यन्त्र की निर्माण-विधि ६२४]

४९. सन्तानप्रद याग

६२५-६२८

[सन्तानप्रद यागविधि ६२६, पितृहवन, देवहवन ६२६, पंचावरण-पूजा-विधि ६२७, त्रिवर्षीय संतानयाग-विधि ६२८]